

Chapter 2

Chapter 2 2nd Public Talk Saanen 14th July 1981	अध्याय दो
<p>1 We were saying that human consciousness is similar in all human beings. Our consciousness, whether we live in the East or West, is made up of many layers of fears, anxieties, pleasures, sorrows and every form of faith. Occasionally, perhaps, in that consciousness there is also love, compassion, and from that compassion a totally different kind of intelligence. And always there is the fear of ending, death. Human beings throughout the world from time immemorial have tried to find out if there is something sacred, beyond all thought, something incorruptible and timeless.</p>	<p>हम कह रहे थे कि सभी मनुष्य प्राणियों में एक ही मानव-चेतना है। हम पूर्व के निवासी हों या पश्चिम के, हमारी चेतना की अंतर्वस्तु एक ही है : भय, चिंता, सुख, दुख आदि की कई परतें तथा हर प्रकार की आस्था। कभी-कभार शायद उसी चेतना में प्रेम का, करुणा का भी उद्भव हो जाता है। करुणा के साथ एक पूर्णतः भिन्न प्रकार की प्रज्ञा का उदय होता है। और समाप्त होने का, मृत्यु का भय तो हमेशा लगा ही है। अनादि काल से विश्व-भर में मनुष्य ने यह पता लगाने की कोशिश की है कि क्या ऐसी कोई पावनता विद्यमान है जो विचार के परे हो, अविकारी हो, समयातीत हो।</p>
<p>2 There are the various group consciousnesses; the businessmen with their consciousness, the scientists with theirs and the carpenter with his, these are of the content of consciousness and are the product of thought. Thought has created wonderful things; from the extraordinary technology of computers, to telecommunication, to robots, surgery and medicine. Thought has invented religions; all the religious organizations throughout the world are put together by thought.</p>	<p>विभिन्न सामूहिक चेतनाएं हैं, व्यापारियों की अपनी चेतना, वैज्ञानिकों की अपनी, काष्ठकर्मियों की अपनी। यह सभी चेतना की अंतर्वस्तु है जो विचार की उपज है। विचार ने आश्चर्यकारक वस्तुओं का निर्माण किया है; कंप्यूटर की असाधारण तकनीकी से लेकर दूरसंचार, यंत्रमानव, शल्यचिकित्सा तथा औषधिशास्त्र तक। विचार ने धर्मों का आविष्कार किया है, विश्व भर के सारे धार्मिक संगठन विचार की ही निर्मिति हैं।</p>
<p>3 Thought has invented the computer. You must understand the complexity and the future of the computer; it is going to outstrip man in his thought; it is going to change the structure of society and the structure of government. This is not some fantastic conclusion of the speaker, or some fantasy, it is something that is actually going on now, of which you may not be aware. The computer has a mechanical intelligence; it can learn and invent. The computer is going to make human labour practically unnecessary - perhaps two hours work a day. These are all changes that are coming.</p>	<p>विचार ने कंप्यूटर का आविष्कार किया है। कंप्यूटर की जटिलताओं को तथा उसके भविष्य को समझना आपके लिए बहुत आवश्यक है; विचार के क्षेत्र में कंप्यूटर मनुष्य के कहीं आगे निकल जाने वाला है। कंप्यूटर समाज का, सरकार का ढांचा बदल देगा। यह मेरा अपना कोई काल्पनिक निष्कर्ष नहीं है, और न ही कोई स्वप्नचित्र। यह सब वास्तव में इस समय चल रहा है, और हो सकता है आपको इसका पता न हो। कंप्यूटर की अपनी यांत्रिक बुद्धि होती है, वह सीख सकता है तथा नया आविष्कार भी कर सकता है। मानवीय श्रम को कंप्यूटर लगभग अनावश्यक बना देगा, दिन में शायद बस दो घंटे ही काम करना पड़े! ये बदलाव बस आने ही</p>

Chapter 2

<p>You may not like it, you may revolt against it, but it is coming.</p>	<p>वाले हैं। हो सकता है आप इसे पसंद न करें, इसके विरुद्ध विद्रोह करें, पर ऐसा होने ही वाला है।</p>
<p>4 Thought has invented the computer, but human thought is limited and the mechanical intelligence of the computer is going beyond that of man. It is going to totally revolutionize our lives. So what will a human being be then? These are facts, not some specialized conclusions of the speaker.</p>	<p>कंप्यूटर का आविष्कार यद्यपि विचार ने ही किया है, पर मनुष्य का विचार सीमित है, और कंप्यूटर की यांत्रिक बुद्धि मानवीय बुद्धि के आगे निकली जा रही है। कंप्यूटर हमारे जीवन में पूरी तरह से क्रांति लाने जा रहा है। ऐसी स्थिति में मनुष्य की क्या हैसियत होगी? ये सच्चाइयां हैं, किसी विशेषज्ञ के तौर पर गढ़े इस वक्ता के अपने निष्कर्ष नहीं हैं।</p>
<p>5 When we consider what the capacity of the computer is, then we have to ask ourselves: what is a human being to do? The computer is going to take over most of the activities of the brain. And what happens to the brain then? When a human being's occupation is taken over by the computer, by the robot, what becomes of the human? We human beings have been 'programmed' biologically, intellectually, emotionally, psychologically, through millions of years, and we repeat the pattern of the programme over and over again. We have stopped learning: and we must enquire if the human brain, which has been programmed for so many centuries, is capable of learning and immediately transforming itself into a totally different dimension. If we are not capable of that, the computer, which is much more capable, rapid and accurate, is going to take over the activities of the brain. This is not something casual, this is a very very serious, desperately serious matter. The computer can invent a new religion. It could be programmed by an expert Hindu scholar, by a Catholic, by a protestant or a Muslim, and it would turn out a marvellous structure for a new religion! And we, if we are not aware of what is happening, we will follow that new structure which has been turned out by the computer. See the seriousness of all this, please.</p>	<p>कंप्यूटर की असाधारण क्षमता के बारे में जब भी हम गौर करते हैं, तो अपने आप से हमें पूछना पड़ता है : अब मनुष्य को क्या करना होगा? मानव मस्तिष्क की अधिकांश क्रियाएं जब कंप्यूटर अपना लेगा, तब मानव मस्तिष्क का क्या होगा? मनुष्य का सारा काम यदि कंप्यूटर संभाल लेगा, रोबोट संभाल लेगा, तो फिर मनुष्य का क्या होगा? जैविक रूप से, बौद्धिक रूप से, भावनात्मक रूप से, मानसिक रूप से लाखों वर्षों से हम मनुष्य प्राणी पूर्वनियोजित हैं, और इस पूर्वनियोजन के ढांचे की हम बार बार पुनरावृत्ति करते रहते हैं। हमने सीखना छोड़ दिया है। और हमें पता लगाना है कि क्या सदियों से पूर्वनियोजित यह मानव मस्तिष्क सीखने में तथा अपने आप को तत्काल किसी भिन्न आयाम में ले जाने में सक्षम है। यदि हमारे पास यह क्षमता नहीं है तो मानव मस्तिष्क की क्रियाओं को कंप्यूटर अपने अधीन कर लेगा, क्योंकि कंप्यूटर मानव मस्तिष्क से कहीं अधिक समर्थ, कहीं अधिक तेज़रफ़्तार तथा कहीं अधिक दोषरहित है, यह कोई ऐसी-वैसी साधारण बात नहीं, यह बहुत ही गंभीर बात है। कंप्यूटर एक नये धर्म का आविष्कार तक कर सकेगा। किसी भी विद्वान हिंदू, कैथोलिक, प्रोटेस्टेंट या मुस्लिम उस्ताद द्वारा उसका पूर्वनियोजन किया जा सकेगा। और इस पूर्वनियोजन से नये धर्म की कोई अद्भुत संरचना निकल पड़ेगी और जो कुछ घट रहा है, उसके प्रति हम यदि सावधान न रहे तो कंप्यूटर से निकली उस नयी धर्म संरचना का हम अनुसरण करने लगेंगे। इस सारी बात की गंभीरता को समझिए।</p>

Chapter 2

<p>6 Our consciousness has been programmed for thousands and thousands of years to think of ourselves as individuals, as separate entities struggling, in conflict from the moment we are born until we die. We are programmed to that. We have accepted that. We have never challenged it; we have never asked if it is possible to live a life absolutely without conflict. Never having asked it we will never learn about it. We repeat. It is an innate part of our existence to be in conflict - nature is in conflict: that is our argument - and we consider that progress is only through conflict. Religious organizations throughout history have maintained the idea of individual salvation. We are questioning very seriously whether there is an individual consciousness; whether you, as a human being, have a separate consciousness from the rest of mankind. You have to answer this, not just play with it.</p>	<p>हम एक दूसरे से भिन्न पृथक् व्यक्तित्व हैं, जन्म से लेकर मृत्यु तक एक-दूसरे के साथ संघर्ष करने वाली, द्वंद्व में रहने वाली पृथक् हस्तियां हैं ऐसा मानने के लिए हमारी चेतना हजारों वर्षों से पूर्वनियोजित है। हम इसी प्रकार पूर्वनियोजित हैं, और इस पूर्वनियोजन को, प्रोग्रैमिंग को हमने स्वीकार लिया है। उसे कभी चुनौती नहीं दी, हमने अपने-आप से यह कभी नहीं पूछा कि पूर्णतः द्वंद्वरहित जीवन जीना क्या संभव है। और यदि हम पूछेंगे ही नहीं तो इसके बारे में जान भी नहीं पाएंगे। बस हम दोहराने में लगे रहेंगे। कहेंगे कि द्वंद्व में रहना हमारे अस्तित्व का जन्मजात अंग है--हमारी दलील यह है कि समस्त प्रकृति ही द्वंद्व में रहती है और हम मानते हैं कि प्रगति केवल द्वंद्व के माध्यम से ही हो सकती है। इतिहास के आरंभ से आज तक सभी धार्मिक संगठन व्यक्तिगत मुक्ति की धारणा को मानते आए हैं। हम बड़ी गंभीरता के साथ शंका व्यक्त कर रहे हैं कि क्या व्यक्तिगत चेतना नाम की कोई चीज़ है भी। क्या एक मनुष्य प्राणी के रूप में शेष मनुष्य जाति की चेतना से भिन्न आपकी अपनी कोई विशिष्ट चेतना है? इस प्रश्न का उत्तर आपको देना ही होगा, इससे आप खिलवाड़ नहीं कर सकते।</p>
<p>7 Having been brought up, programmed, conditioned, to be individuals, then our consciousness is all this activity of thought. Fear and the pursuit of pleasure are the movement of thought. The suffering, anxiety, uncertainty and the deep regrets, wounds, the burden of centuries of sorrow, are all part of thought. Thought is responsible for what we call love, which has become sensual pleasure, something to be desired.</p>	<p>पृथक् व्यक्ति विशेष होने के संस्कार में हम आबद्ध हैं, पूर्वनियोजन और पालन-पोषण हमारा उसी हिसाब से हुआ है, अतः हमारी चेतना है विचार की यह समस्त प्रक्रिया। भय और सुख की दौड़ विचार की ही गति है। पीड़ा, चिंता, अनिश्चितता और साथ ही साथ गहरे पश्चात्ताप, गहरे घाव, सदियों के दुख का बोझ ये सब विचार का ही अंश हैं। जिसे हम प्रेम कहते हैं उसके लिए भी विचार ही ज़िम्मेदार है। प्रेम हमारे लिए केवल ऐंद्रिक सुख बन गया है जो इच्छा का विषय है।</p>
<p>8 As we said, and we will repeat it over and over again until we are quite sure of it, we are thinking together, the speaker is not telling you what to think. He is not making propaganda--it is a horrible thing, propaganda. He is not telling you how to act, what to believe, but together, we are investigating the catastrophe that is taking</p>	<p>जैसा हमने पहले भी कहा है और जिसके बारे में पूर्णतः आश्वस्त होने तक इस बात की हम बारंबार पुनरावृत्ति करते रहेंगे कि हम साथ साथ विचार-विमर्श कर रहे हैं; क्या सोचना चाहिए इसके बारे में वक्ता आपको कोई निर्देश नहीं दे रहा है। वह प्रचार नहीं कर रहा है, प्रचार कितनी भयंकर बात है! आपका आचरण कैसा हो, आपको क्या विश्वास करना चाहिए, ये सब</p>

Chapter 2

<p>place in the world outside of us, the utter ruthlessness and violence, and also inwardly in each human being the extraordinary conflict that is going on. Together we are examining. It is not - if one may point out - that you are merely listening to some ideas or conclusions; we are not talking about ideas, conclusions or beliefs. We are looking at this world that human beings have produced, for which all of us are responsible. We must be clear in our understanding - at whatever level that understanding be, whether it is intellectual understanding, which is merely verbal, or the understanding of deep significance so that that understanding acts - that we have come to a point where we have to make a decision, not by the exercise of will, but the decision that will naturally come when we begin to understand the whole nature and structure of the world, both externally and internally. That perception will bring about a decision, an action.</p>	<p>बातें वह आपको नहीं बता रहा है, बल्कि आप और मैं, हम सब मिलकर, हमारे बाहर जो विश्व है उसमें घट रहे महाअनर्थ की, घोर निष्ठुरता की, हिंसा की और साथ ही प्रत्येक मनुष्य के भीतर चल रहे असाधारण द्वंद्व की भी छानबीन कर रहे हैं। हम सब साथ-साथ जांच-पड़ताल कर रहे हैं, मैं आपको ध्यान दिलाऊं कि आप केवल कुछ धारणाओं को या निष्कर्षों को सुन भर नहीं रहे हैं, धारणाओं की, निष्कर्षों की अथवा विश्वासों की हम बात ही नहीं कर रहे हैं। जिस विश्व को मनुष्यों ने बनाया है, जिस विश्व के लिए हम सभी ज़िम्मेदार हैं, उस विश्व की ओर हम नज़र डाल रहे हैं। हमारी समझ में स्पष्टता का होना आवश्यक है, वह समझ किसी भी स्तर की हो, चाहे बौद्धिक समझ हो या गहरे तात्पर्य की समझ; बौद्धिक समझ केवल शाब्दिक समझ होती है, गहरे तात्पर्य की समझ कर्म को जन्म देती है। हम ऐसी स्थिति तक पहुंच गये हैं जहां हमें कोई निर्णय लेना होगा, संकल्पशक्ति से लिया गया निर्णय नहीं, बल्कि वह निर्णय जो सहज रूप से घटित होता है जब हम विश्व की समस्त संरचना को--अपने बाहर भी और भीतर भी--समझना शुरू करते हैं। वह प्रत्यक्ष बोध ही निर्णय को, कर्म को जन्म देगा।</p>
<p>9 Thought has created the problems which surround us and our brains are trained, educated, conditioned, to the solving of problems. Thought has created the problems, like the division between nationalities. Thought has created the division and the conflict between various economic structures; thought has created the various religions and the divisions between them and therefore there is conflict. The brain is trained to attempt to solve these conflicts which thought has created. It is essential that we understand deeply the nature of our thinking and the nature of our reactions which arise from our thinking. Thought dominates our lives, whatever we do; whatever action takes place, thought is behind that action. In every activity, whether it is sensual or intellectual, or biological, thought is operating all the time. Biologically, through centuries, the brain</p>	<p>जिन समस्याओं से हम घिरे हुए हैं वे सारी विचार की ही उपज हैं। और हमारे मस्तिष्क इन समस्याओं को सुलझाने के लिए शिक्षित, प्रशिक्षित तथा संस्कारबद्ध हैं। समस्याएं विचार की ही उपज हैं, मसलन राष्ट्रीयताओं में विभाजन। विभिन्न आर्थिक संरचनाओं के बीच विभाजन तथा द्वंद्व विचार की ही निर्मिति हैं। विचार ने ही विभिन्न धर्मों को जन्म दिया है और उनके बीच विभाजन भी उसी की देन है, परिणामस्वरूप धर्मों के बीच द्वंद्व रहता है। और हमारा मस्तिष्क विचार ही से उत्पन्न समस्याओं को सुलझाने का प्रयास करने के लिए प्रशिक्षित है। अपने विचार का तथा उससे उत्पन्न अपनी प्रतिक्रियाओं का स्वरूप गहराई से समझना हमारे लिए अत्यावश्यक है। हम चाहे कुछ भी कर रहे हों, विचार हमारे जीवन पर छाया रहता है। कुछ भी कर्म घटित हो, उसके पीछे विचार ही होता है। गतिविधि चाहे ऐंद्रिक हो, बौद्धिक हो या जैविक, विचार लगातार कार्यरत रहता है। जैविक रूप से हमारा मस्तिष्क सदियों से पूर्वनियोजित किया गया है, संस्कारित किया गया है--शरीर अपने ढंग से कार्य करता</p>

Chapter 2

<p>has been programmed, conditioned - the body acts in its own way, the action of breathing, the beat of the heart and so on - so, if you are a Catholic, a Hindu, or a Buddhist, you repeat that conditioning over and over again.</p>	<p>है, सांस लेने की क्रिया, हृदय की धड़कनें, और ऐसी ही और कई सारी क्रियाएं। उसी प्रकार यदि आप कैथोलिक हैं या हिंदू अथवा बौद्ध, तो आप भी अपनी उस संस्कारबद्धता की बार-बार पुनरावृत्ति करते रहेंगे।</p>
<p>10 Thought is a movement in time and space. Thought is memory, the remembrance of past things. Thought is the activity of knowledge, knowledge which has been gathered together through millions of years and stored as memory in the brain. If you observe the activity of your thinking you will see that experience and knowledge are the basis of your life. Knowledge is never complete, it must always go together with ignorance. We think knowledge is going to solve all our problems, whether the knowledge of the priest, the guru, the scientist, the philosopher, or the latest psychiatrist. But we have never questioned whether knowledge in itself can solve any of our problems - except perhaps technological problems.</p>	<p>विचार है समय तथा अवकाश के तहत घटित होने वाली गतिविधि। विचार है स्मृति, विगत बातों का स्मरण। विचार है जानकारी की क्रिया, यह ज्ञान लाखों वर्षों से संगृहीत हो कर मस्तिष्क में स्मृति के रूप में संचित है। अपनी विचार-क्रिया का यदि आप निरीक्षण करेंगे, तो आपको पता चलेगा कि अनुभव और ज्ञान आपके जीवन के आधार हैं तथा ज्ञान कभी भी परिपूर्ण नहीं हो सकता, उसके साथ अज्ञान का रहना भी अवश्यंभावी है। हम समझते हैं कि ज्ञान से हमारी सारी समस्याएं हल हो जाएंगी, वह ज्ञान चाहे किसी पुरोहित का हो, किसी गुरु का, किसी वैज्ञानिक का, किसी दार्शनिक का, या फिर किसी अत्याधुनिक मनोश्चिकित्सक का। लेकिन हमने इस बात पर कभी सवाल नहीं उठाया कि क्या ज्ञान, जानकारी सचमुच हमारी समस्याओं का निराकरण करने में सक्षम है--सिवाय तकनीकी समस्याओं के।</p>
<p>11 Knowledge comes through time. To learn a language you need time. To learn a skill or to drive a car efficiently takes time. The same movement of time is brought over to the psychological field; there too we say, 'I must have time to learn about myself.' 'I must have time in order to change myself from 'what I am' to 'what I should be.' Bringing over the activity of the external world into the psychological world means that time is a great factor in our life - tomorrow, the past and the present. Time is thought. Time is required in the acquisition of knowledge through experience, both externally in the world and inwardly. That is the way we have been programmed.</p>	<p>ज्ञान के लिए आवश्यक है समय का माध्यम। कोई भाषा सीखनी हो तो समय की आवश्यकता होगी। किसी कार्यकुशलता को सीखने के लिए या दक्षता के साथ कार चलाना सीखने के लिए समय चाहिए। समय की उसी गति को हम मन के क्षेत्र में भी ले आते हैं और कहने लगते हैं, "मुझे अपने बारे में जानने के लिए समय चाहिए, "मैं 'जो हूँ' उसे मुझे 'जो होना चाहिए' में परिवर्तित करने के लिए समय चाहिए"। बाहरी विश्व पर लागू होने वाली इस गतिविधि को मानसिक क्षेत्र में ले आने का अर्थ है कि हमने अपने जीवन में समय को असाधारण महत्त्व दे दिया है--आनेवाला कल, अतीत और वर्तमान। समय विचार ही है। बाहरी विश्व में हो या भीतरी तौर पर, अनुभव के द्वारा ज्ञान प्राप्त करने के लिए समय की आवश्यकता पड़ती है, इसी ढंग से हमारा पूर्वनियोजन हुआ है।</p>
<p>12 Being so programmed we consider time is necessary to bring about a deep,</p>	<p>इस प्रकार पूर्वनियोजित होने के कारण हम समझते हैं कि मानवीय संरचना में यदि कोई</p>

Chapter 2

<p>fundamental change in the human structure. We employ time as thought - 'I am this, I shall be that.' You would also say in the technical world: 'I do not know how to construct a computer but I will learn., Time, knowledge, memory, thought, they are a single unit; they are not separate activities but a single movement. Thought, the outcome of knowledge, must everlastingly be incomplete and therefore limited, because knowledge is incomplete. Whatever is limited must bring about conflict. Nationality is limited. Religious belief is limited. An experience which you have had, or which you are longing for, is limited. Every experience must be limited.</p>	<p>गहरा, बुनियादी परिवर्तन लाना हो, तो उसके लिए भी समय की आवश्यकता होगी। विचार के रूप में हम समय का प्रयोग करते हैं "मैं ऐसा हूँ, और मैं वैसा बनूँगा"। तकनीकी क्षेत्र में भी आप कुछ ऐसा ही कहेंगे, "कंप्यूटर बनाना मैं नहीं जानता, पर मैं सीख लूँगा"। समय, ज्ञान, स्मृति, विचार ये सब एक ही इकाई है, ये भिन्न क्रियाएं नहीं, बल्कि एक ही गतिविधि है। विचार ज्ञान की उपज है, इसलिए वह निरंतर अधूरा तथा सीमित होगा क्योंकि ज्ञान स्वयं अधूरा होता है। जो कुछ सीमित है वह अवश्य ही द्वंद्व उत्पन्न करेगा। राष्ट्रीयता सीमित है। धार्मिक विश्वास सीमित है। जो अनुभूति आपको हुई या जिस अनुभव की आपको लालसा है, वह भी सीमित है। कोई भी अनुभव सीमित ही होगा।</p>
<p>13 Questioner: Why?</p>	<p>प्रश्नकर्ता : क्यों?</p>
<p>14 Krishnamurti: Because there are more experiences. I may have an experience sexually, or the experience of the possession of wealth, the experience of giving everything up and going into a monastery - those experiences are all limited.</p>	<p>कृष्णमूर्ति : क्योंकि अनुभव तो और होंगे। मुझे कोई यौन अनुभव हुआ होगा, या संपत्ति इकट्ठा करने का अनुभव, या तो फिर सर्वसंगपरित्याग कर किसी मठ में दाखिल होने का अनुभव--ये सारे के सारे अनुभव सीमित ही होंगे।</p>
<p>15 Thought, being limited, creates problems - national, economic and religious divisions; then thought says, 'I must solve them.' So thought is always functioning in the resolution of problems. And the computer, a mechanism which has been programmed, can outstrip all of us because it has no problems; it evolves, learns, moves.</p>	<p>सीमित होने के कारण विचार समस्याएं उत्पन्न करता है, जैसे राष्ट्रीय, आर्थिक और धार्मिक विभाजन की समस्याएं। समस्याएं उत्पन्न करने के पश्चात फिर विचार कहता है, "मुझे इन समस्याओं को हल करना होगा"। अतः विचार हमेशा समस्याओं के निराकरण में लगा रहता है। दूसरी ओर, कंप्यूटर चूंकि एक नियोजनबद्ध यंत्र-रचना है, उसकी ऐसी कोई समस्याएं नहीं होंगी, और इसलिए वह हम सब को पीछे छोड़ कर बहुत आगे निकल जाएगा; कंप्यूटर विकसित होता रहेगा, सीखता रहेगा, अधिक-अधिक आगे बढ़ता रहेगा।</p>
<p>16 Our consciousness has been programmed as an individual consciousness. We are questioning whether that consciousness, which we have accepted as individual, is actually individual at all. Do not say: 'What will happen if I am not an individual?' Something totally different may happen.</p>	<p>हमारी चेतना का एक व्यक्तिविशिष्ट चेतना के रूप में पूर्वनियोजन किया गया है। हम प्रश्न उठा रहे हैं कि जिसे हम व्यक्तिगत चेतना मान बैठे हैं वह क्या वास्तव में व्यक्तिगत चेतना है भी। अब ऐसा मत कहिए कि "मैं यदि एक पृथक् व्यक्तित्व नहीं रहूँगा तो मेरा क्या होगा?" हो सकता है, कुछ बिलकुल ही अलग घटित हो। आपको किसी</p>

Chapter 2

<p>You may have an individual training in a particular trade, in a particular profession, you may be a surgeon, a doctor, an engineer, but that does not make you an individual. You may have a different name, a different form - that does not make individuality; nor the acceptance that the brain through time has affirmed: 'I am an individual, it is my desire to fulfil, to become through struggle.' That so-called individual consciousness, which is yours, is the consciousness of all humanity.</p>	<p>विशिष्ट धंधे में, किसी विशिष्ट व्यवसाय में व्यक्ति के तौर पर प्रशिक्षण दिया गया होगा, आप एक सर्जन, एक डॉक्टर, एक इंजीनियर बन गए होंगे, पर इससे आप एक पृथक् व्यक्ति नहीं बन जाते। आपका कोई अलग नाम होगा, अलग रूप होगा, पर उससे भी पृथक् व्यक्तित्व नहीं बनता, और न ही इस मान्यता से जिसकी मस्तिष्क हमेशा "मैं व्यक्ति विशेष हूँ, मुझे कुछ कर गुज़रना है, मुझे जूझ कर कुछ प्राप्त करना है" ऐसी अविराम रट लगाता रहा है। जिसे आप अपनी विशिष्ट व्यक्तिगत चेतना समझते हैं वह समस्त मनुष्य जाति की चेतना ही है।</p>
<p>17 If your consciousness, which you have accepted as separate, is not separate, then what is the nature of your consciousness? part of it is the sensory responses. Those sensory responses are naturally, necessarily, programmed to defend yourself, through hunger to seek food, to breathe, unconsciously. Biologically you are programmed. Then the content of your consciousness includes the many hurts and wounds that you have received from childhood, the many forms of guilt; it includes the various ideas, imaginary certainties; the many experiences, both sensory and psychological; there is always the basis, the root, of fear in its many forms. With fear naturally goes hatred. Where there is fear there must be violence, aggression, the tremendous urge to succeed, both in the physical and the psychological world. In the content of consciousness there is the constant pursuit of pleasure; the pleasure of possession, of domination, the pleasure of money which gives power, the pleasure of a philosopher with his immense knowledge, the guru with his circus. Pleasure again has innumerable forms. There is also pain, anxiety, the deep sense of abiding loneliness and sorrow, not only the so-called personal sorrow but also the enormous sorrow brought about through wars, through neglect, through this endless conquering of one group of people by another. In that consciousness there is the racial and group</p>	<p>जिसे आप एक पृथक् चेतना मान बैठे हैं वह यदि वैसी नहीं है तो फिर उस चेतना का वास्तविक स्वरूप क्या है? उसका एक हिस्सा ऐंद्रिय प्रतिक्रियाओं से बना है; ये प्रतिक्रियाएं स्वभावतः अनिवार्यतया आपकी अपनी सुरक्षा के लिए पूर्वनियोजित हैं, जैसे भूख के कारण भोजन की खोज, सांस लेना आदि अचेतन क्रियाएं। जैविक दृष्टि से आप पूर्वनियोजित, (प्रोग्रैम्ड) हैं। फिर आपकी चेतना में आपके द्वारा बचपन से खायी गयी चोटों और क्षतियां भी समाविष्ट हैं, और उसी प्रकार कई सारे अपराध-बोध भी। विभिन्न धारणाएं, कल्पित निश्चितताएं, हमारे बहुत सारे अनुभव--ऐंद्रिय भी तथा मानसिक भी ये सारी चीजें उसमें समाविष्ट हैं। और बुनियाद में, जड़ में है भय, जो अपने कई रूपों में विद्यमान रहता है। भय के साथ सहज ही जुड़ा हुआ होता है विद्वेष। जहां भी विद्वेष है, वहां हिंसा होगी, आक्रामकता होगी, सफलता की भयंकर लालसा होगी। भौतिक तथा मानसिक दोनों क्षेत्रों में सुख की अविरत तलाश भी चेतना की अंतर्वस्तु का एक हिस्सा है--स्वामित्व का सुख, अधिकार का सुख, संपत्ति के साथ आने वाली ताकत का सुख, अपने अगाध ज्ञान से मंडित दार्शनिक का सुख, अपनी सर्कस जमाये बैठे गुरु का सुख, सुख के अगणित रूप हैं। और साथ ही पीड़ा है, चिंता है, हमेशा बने आये अकेलेपन का तथा दुख का गहरा एहसास है, केवल तथाकथित निजी दुख का ही नहीं, बल्कि युद्धों के कारण, उपेक्षा के कारण, एक दूसरे को जीतने के वास्ते समुदायों के बीच चल रही होड़ के कारण उत्पन्न होने वाले घोर दुख का एहसास भी। उस चेतना में प्रजातीय तथा सामुदायिक अंतर्वस्तु भी समाविष्ट है। और अंत में उसमें शामिल है मृत्यु।</p>

Chapter 2

<p>content; ultimately there is death.</p>	
<p>18 This is our consciousness - beliefs, certainties and uncertainties, anxiety, loneliness and endless misery. These are the facts. And we say this consciousness is mine! Is that so? Go to the Far East, or the Near East, America, Europe, anywhere where human beings are; they suffer, they are anxious, lonely, depressed, melancholic, struggling and in conflict - they are just the same as you. So, is your consciousness different from that of another? I know it is very difficult for people to accept - you may logically accept it, intellectually you may say, 'Yes, that is so, maybe.' But to feel this total human sense that you are the rest of mankind requires a great deal of sensitivity. It is not a problem to be solved. It is not that you must accept that you are not an individual, that you must endeavour to feel this global human entity. If you do, you have made it into a problem which the brain is only too ready to try to solve! But if you really look at it with your mind, your heart, your whole being totally aware of this fact, then you have broken the programme. It is naturally broken. But if you say, 'I will break it,' then you are again back into the same pattern. To the speaker this is utter reality, not something verbally accepted because it is pleasant; it is something that is actual. You may have logically, reasonably and sanely examined and found that it is so; but the brain which has been programmed to the sense of individuality is going to revolt against it (which you are doing now). The brain is unwilling to learn. Whereas the computer will learn because it has nothing to lose. But here you are frightened of losing something.</p>	<p>यही है हमारी चेतना--विश्वास, निश्चितताएं, अनिश्चितताएं, चिंता, अकेलापन और अंतहीन विपदा, ये सब तथ्य हैं। और हम कहते हैं, यह चेतना मेरी निजी चेतना है! क्या वास्तव में ऐसा है? सुदूर पूर्व में जाइए या समीप पूर्व में, अमरीका जाइए या यूरोप, मनुष्यों की बस्ती वाले किसी भी स्थान पर जाइए, मनुष्य प्राणी व्यथित हैं, चिंतित हैं, अकेले हैं, उदास हैं, अवसादग्रस्त हैं, संघर्ष में फंसे हैं, द्वंद्व में जकड़े हैं; ये सारे मनुष्य आप जैसे ही हैं। तो क्या आप की चेतना किसी और मनुष्य की चेतना से भिन्न है? मैं जानता हूँ कि इस बात को स्वीकार करना बहुत कठिन है--चाहे तार्किक रूप से आप इसे स्वीकार कर लें, बौद्धिक तौर पर कहने लगे, "हां, हो सकता है ऐसा ही हो"; परंतु समस्त मनुष्य जाति से अभिन्नता के समग्र मानवीय भाव की अनुभूति होने के लिए अत्यधिक संवेदनशीलता आवश्यक है। यह कोई समस्या नहीं है जिसे हल किया जाना हो। ऐसा भी नहीं कि आप अब मान लें, स्वीकार कर लें कि आप विशिष्ट, भिन्न व्यक्ति नहीं है, या इस वैश्विक मानवीय अस्तित्व को अनुभव करने का प्रयास करने लगे। आप यदि ऐसा कुछ करेंगे, तो निस्संदेह इसे एक समस्या बना लेंगे, और आपका मस्तिष्क तो समस्याओं को सुलझाने के लिए सदा ही तैयार बैठा है। परंतु आप यदि पूरी जागरूकता के साथ, मन से, हृदय से, अपने पूरे अस्तित्व से इस तथ्य को वास्तव में देख लेते हैं, तब समझ लीजिए कि मस्तिष्क का सारा पूर्वनियोजन आपने तोड़ दिया है। वह सहज ही टूट जाता है। पर यदि आप कहते हैं कि "मैं इस पूर्वनियोजन को, (प्रोग्रैम) को तोड़ डालूंगा", तो फिर आप उसी पुराने ढांचे में वापस आ फंसते हैं। इस वक्ता के लिए यह बात निपट वास्तविकता है, कोई ऐसी बात नहीं है जो सुखद होने के कारण शाब्दिक रूप से स्वीकार कर ली जाए, यह एक सच्चाई है। तर्क से, बुद्धि से, विवेक से जांच कर आप चाहे पता लगा भी लें कि ठीक ऐसा ही है, फिर भी व्यक्ति-विशिष्टता के भाव से पूर्वनियोजित आपका मस्तिष्क इसके विरुद्ध विद्रोह करेगा (जैसा कि आप इस समय कर रहे हैं)। मानवीय मस्तिष्क सीखने से बचना चाहता है, जब कि कंप्यूटर सीखने के लिए तैयार है, क्योंकि उसे कुछ भी खोने का भय नहीं है। और इधर आप हैं जो कि कुछ-न-कुछ खोने</p>

Chapter 2

	से भयभीत रहते हैं।
<p>19 Can the brain learn? That is the whole point; so now we have to go into this question of what learning is. Learning for most of us is a process of acquiring knowledge. I do not know the Russian language but I will learn it. I will learn day after day, memorizing, holding on to certain words, phrases and the meanings, syntax and grammar. If I apply myself I can learn almost any language within a certain time. To us, learning is essentially the accumulation of knowledge or skill. Our brains are conditioned to this pattern. Accumulate knowledge and from that act. When I learn a language, there knowledge is necessary. But if I am learning psychologically about the content of my mind, of my consciousness, does learning there imply examining each layer of it and accumulating knowledge about it and from that knowledge acting - following the same pattern as learning a language? If the brain repeats that pattern when I am learning about the content of my consciousness, it means that I need time to accumulate knowledge about myself, my consciousness. Then I determine what the problems are and the brain is ready to solve them - it has been trained to solve problems. It is repeating this endless pattern and that is what I call learning. Is there a learning which is not this? Is there a different action of learning, which is not the accumulation of knowledge? You understand the difference?</p>	<p>क्या मस्तिष्क के लिए सीखना संभव है? यही असली मसला है। अतः अब हमें देखना होगा कि सीखना क्या होता है। अधिकांश लोगों के लिए सीखने का अर्थ होता है ज्ञानार्जन। रूसी भाषा का ज्ञान मुझे नहीं है, पर मैं वह भाषा सीख लूंगा; दिन-प्रतिदिन मैं सीखता जाऊंगा, रटते हुए, कुछ शब्दों को, कुछ वाक्यांशों को, कुछ शब्दार्थों को, कुछ वाक्य रचनाओं को, व्याकरण के कुछ नियमों को पकड़ में रखते हुए। यदि मैं उसके पीछे पड़ जाऊं तो लगभग कोई भी भाषा मैं एक निश्चित समय में सीख सकता हूँ। हमारे लिए सीखने का मुख्य अर्थ है ज्ञान या कुशलता का संचयन। हमारे मस्तिष्क इसी ढांचे में संस्कारबद्ध हैं। पहले ज्ञान-संचय कीजिए और फिर उस पर आधारित कर्म। जब मैं कोई भाषा सीखना चाहता हूँ तब ज्ञान आवश्यक होता है। परंतु यदि मैं मनोवैज्ञानिक रूप से अपने मन के बारे में, अपनी चेतना की अंतर्वस्तु के बारे में सीखना चाहूँ तो क्या अपनी चेतना की प्रत्येक परत की जांच कर मुझे उसके बारे में ज्ञान संचित करना होगा? और फिर उसी संचित ज्ञान के आधार पर कर्म करना होगा? भाषा सीखते समय प्रयुक्त किए जाने वाले उसी प्रारूप का अनुसरण करते हुए अपनी चेतना की अंतर्वस्तु के बारे में सीखते समय यदि मेरा मस्तिष्क उसी प्रारूप की पुनरावृत्ति करेगा, तो इसका अर्थ यह हुआ कि मुझे अपने बारे में, अपनी चेतना के बारे में ज्ञान संचित करने के लिए समय की आवश्यकता होगी। फिर मैं तय करूंगा कि समस्याएं क्या हैं, और मस्तिष्क तो उनको सुलझाने के लिए तैयार बैठा ही है। मस्तिष्क को तो समस्याएं हल करने के लिए प्रशिक्षित ही किया गया है। यह केवल उस अंतहीन प्रारूप की पुनरावृत्ति है, और इसी को हम सीखना कहते हैं। क्या इससे भिन्न प्रकार का कोई सीखना संभव है? ज्ञान-संचय की क्रिया से भिन्न क्या सीखने की कोई अन्य विधा संभव है? क्या इस भेद को आप समझ रहे हैं?</p>
<p>20 Let me put it differently: from experience we acquire knowledge, from knowledge memory; the response of memory is thought, then from thought action, from that action you learn more, so the cycle is repeated. That is the pattern of</p>	<p>इसी बात को मैं कुछ भिन्न ढंग से व्यक्त करूंगा : अनुभव से हम ज्ञानार्जन करते हैं, ज्ञान से स्मृति उत्पन्न होती है, स्मृति का प्रत्युत्तर है विचार, उस विचार से कर्म का जन्म होता है, और उस कर्म से आप और सीखते हैं; इस प्रकार इस चक्र का आवर्तन चलता रहता है।</p>

Chapter 2

<p>our life. That form of learning will never solve our problems because it is repetition. We acquire more knowledge which may lead to better action; but that action is limited and this we keep repeating. The activity from that knowledge will not solve our human problems at all. We have not solved them, it is so obvious. After millions of years we have not solved our problems: we are cutting each other's throats, we are competing with each other, we hate each other, we want to be successful, the whole pattern is repeated from the time man began and we are still at it. Do what you will along this pattern and no human problem will be solved, whether it be political, religious or economic, because it is thought that is operating.</p>	<p>यही है हमारे जीवन का ढर्रा। इस ढर्रे में सीखने से हमारी समस्याएं कदापि हल नहीं होंगी। यह तो केवल यांत्रिक पुनरावृत्ति है। हम अधिक ज्ञान अर्जित करते हैं, यह सोचकर कि वह बेहतर कर्म की ओर ले जाएगा, परंतु वह कर्म भी सीमित ही होता है और इस प्रकार हम पुनरावृत्ति करते जाते हैं। ऐसे ज्ञान से उत्पन्न कोई भी क्रिया हमारी मानवीय समस्याओं का समाधान कतई नहीं कर पाएगी। और अभी तक इन समस्याओं को हल करना हमारे लिए संभव नहीं हुआ है, यह बहुत ही स्पष्ट है। लाखों वर्ष बीतने के बाद भी हम अपनी समस्याओं को हल नहीं कर पाए हैं, हम एक दूसरे का गला काट रहे हैं, एक दूसरे के साथ स्पर्द्धा में लगे हुए हैं, एक दूसरे से घृणा करते हैं, हम सफलता के लिए लालायित हैं। मनुष्य जाति के आरंभ से इसी प्रारूप की पुनरावृत्ति होती रही है, और अब भी हम उसी में जकड़े हुए हैं। इस ढर्रे पर चलकर आप चाहे जो करें उससे किसी भी मानवीय समस्या का हल नहीं होगा, वह समस्या चाहे राजनीतिक हो, धार्मिक हो या आर्थिक, क्योंकि यह सब विचार का ही कार्यकलाप होगा।</p>
<p>21 Now, is there another form of learning; learning, not in the context of knowledge, but a different form, a non-accumulative perception-action? To find out we have to enquire whether it is possible to observe the content of our consciousness and to observe the world without a single prejudice. Is that possible? Do not say it is not possible, just ask the question. See whether, when you have a prejudice, you can observe clearly. You cannot, obviously. If you have a certain conclusion, a certain set of beliefs, concepts, ideals, and you want to see clearly what the world is, all those conclusions, ideals, prejudices and so on will actually prevent it. It is not a question of how to get rid of your prejudices but of seeing clearly, intelligently, that any form of prejudice, however noble or ignoble will actually prevent perception. When you see that, prejudices go. What is important is not the prejudice but the demand to see clearly.</p>	<p>तो क्या सीखने का कोई और ढंग संभव है? जानकारी के संदर्भ में सीखना नहीं, बल्कि एक पूर्णतया भिन्न प्रकार से सीखना, संचयरहित प्रत्यक्षबोध-कर्म? इस बात का पता करने के लिए हमें यह छानबीन करनी होगी कि क्या बिना किसी पूर्वाग्रह के अपनी चेतना की अंतर्वस्तु का तथा साथ ही साथ बाह्य विश्व का अवलोकन संभव है। क्या ऐसा हो सकता है? ऐसा मत कहिए कि यह संभव नहीं; केवल प्रश्न उठाइए। देखिए कि जब भी आपका कोई पूर्वाग्रह होता है तब क्या आप स्पष्टता के साथ निरीक्षण कर पाते हैं? स्पष्ट है कि आप ऐसा नहीं कर पाते। आपके पास यदि पहले से ही कोई निष्कर्ष है, विश्वासों का, अवधारणाओं का, आदर्शों का कोई समुच्चय है, और फिर भी आप स्पष्टतापूर्वक देखना चाहते हैं कि यह संसार कैसा है, तो ऐसा करने में वे सारे निष्कर्ष, आदर्श, पूर्वाग्रह वास्तव में रुकावट बन जाएंगे। प्रश्न यह नहीं कि पूर्वाग्रहों से छुटकारा कैसे पाया जाए, बल्कि जरूरत है स्पष्टतापूर्वक, ज्ञानपूर्वक यह देख लेने की कि कोई भी पूर्वाग्रह, चाहे वह कितना भी बढ़िया हो या घटिया, प्रत्यक्षबोध में रुकावट बन जाएगा। जैसे ही यह बात आपकी समझ में आ जाती है,</p>

Chapter 2

	आपके पूर्वाग्रह विदा हो जाते हैं। महत्त्व पूर्वाग्रह का नहीं, बल्कि स्पष्टता से देखने की आवश्यकता का है।
<p>22 If I want to be a good surgeon I cannot do so with ideals or prejudices about surgeons; I must actually perform surgery. Can you see that a new form of action, a new form of non-accumulative knowledge, is possible which will break the pattern, break the programme, so that you are acting totally differently?</p>	<p>मुझे यदि एक अच्छा शल्यचिकित्सक बनना है तो इस बारे में आदर्श या पूर्वाग्रह रखने से बात नहीं बनेगी, मुझे वास्तव में शल्यचिकित्सा कर दिखानी होगी। क्या आप समझ पा रहे हैं कि एक नये प्रकार का कर्म, एक नये प्रकार का संचयरहित ज्ञान संभव है, और वह उस ढांचे को, उस पूर्वनिर्धारण को तोड़ देगा, ताकि आप पूर्णतः भिन्न ढंग से कर्म कर सकें?</p>
<p>23 The way we have lived, over millions of years, has been the repetition of the same process of acquiring knowledge and acting from that knowledge. That knowledge and action is limited. That limitation creates problems and the brain has become accustomed to solving the problems which knowledge has repeatedly created. The brain is caught in that pattern and we are saying that that pattern will never, in any circumstance, solve our human problems. Obviously we have not solved them up till now. There must be a different, a totally different, movement, which is a non-accumulative perception-action. To have non-accumulative perception is to have no prejudice. It is to have absolutely no ideals, no concepts, no faith - because all those have destroyed man, they have not solved his problems.</p>	<p>लाखों वर्षों से हमारा जीने का ढंग रहा है उस एक ही प्रक्रिया की पुनरावृत्ति : ज्ञान का अर्जन और फिर उस ज्ञान के आधार पर कर्म। वह ज्ञान तथा वह कर्म सीमित ही रहता है। यह सीमितता समस्याएं उत्पन्न करती है और ज्ञान द्वारा बार-बार उत्पन्न की गई समस्याओं को हल करने के लिए मस्तिष्क अभ्यस्त हो गया है। यह मस्तिष्क उसी प्रारूप में जकड़ा हुआ है; और हमारा कहना है कि वह प्रारूप, वह ढर्रा किसी भी परिस्थिति में हमारी मानवीय समस्याओं का समाधान नहीं कर सकता। ज़ाहिर है कि अब तक इन समस्याओं को हम हल नहीं कर पाये हैं। एक अलग, पूर्णतः भिन्न गतिविधि आवश्यक है, जो है संचयरहित प्रत्यक्षबोध-कर्म। संचयरहित प्रत्यक्षबोध का अर्थ है किसी भी पूर्वाग्रह का न होना। इसका अर्थ है किसी आदर्श, किसी अवधारणा, किसी आस्था का न होना क्योंकि इन सभी ने मनुष्य को नष्ट किया है, इन्होंने मनुष्य की समस्याओं को हल नहीं किया है।</p>
<p>24 So: have you a prejudice? Have you a prejudice which has something in common with an ideal? Of course. Ideals are to be accomplished in the future, and knowledge becomes tremendously important in the realizing of ideals. So, can you observe without accumulation, without the destructive nature of prejudice, ideals, faith, belief and your own conclusions and experiences? There is group consciousness, national consciousness, linguistic</p>	<p>तो क्या आपका कोई पूर्वाग्रह है? ऐसा कोई पूर्वाग्रह जो किसी आदर्श के साथ मेल खाता है? यकीनन। आदर्श का अर्थ है भविष्य में उपलब्ध करने की कोई चीज़, और आदर्शों की उपलब्धि के लिए ज्ञान बहुत ही आवश्यक बन जाता है। तो क्या आप बिना संचय किए, बिना पूर्वाग्रह की विनाशकारी प्रवृत्ति के, बिना आदर्शों के, बिना आस्था, विश्वास और अपने ही निष्कर्षों और अनुभवों के अवलोकन कर सकते हैं? मानव-चेतना में है समूहगत चेतना, राष्ट्रीय चेतना, भाषायी चेतना, व्यावसायिक चेतना,</p>

Chapter 2

<p>consciousness, professional consciousness, racial consciousness, and there is fear, anxiety, sorrow, loneliness, the pursuit of pleasure, love and finally death. If you keep acting in that circle, you maintain the human consciousness of the world. just see the truth of this. You are part of that consciousness and you sustain it by saying, 'I am an individual. My prejudices are important. My ideals are essential' - repeating the same thing over and over again. Now the maintenance, the sustenance and the nourishment, of that consciousness takes place when you are repeating that pattern. But when you break away from that consciousness, you are introducing a totally new factor in the whole of that consciousness.</p>	<p>प्रजातीय चेतना, और साथ ही साथ भय है, चिंता है, दुख है, अकेलापन है, सुख की दौड़ है, प्रेम है, और अंत में है मृत्यु। आप यदि इसी दायरे में कर्मरत रहेंगे तो विश्व की इसी मानव चेतना को ही बनाए रखेंगे। इस बात की सच्चाई को देखिए तो सही। इसी चेतना के आप अंश हैं और आप कहते रहते हैं "मैं एक विशिष्ट व्यक्ति हूँ, मेरे पूर्वाग्रह महत्त्वपूर्ण हैं, मेरे आदर्श अत्यावश्यक हैं" और उसी बात की बार-बार पुनरावृत्ति कर इस चेतना को पुष्ट करते जाते हैं। अब इस चेतना का रखरखाव, इसका बना रहना, इसका भरण-पोषण तब होता है जब आप इस प्रारूप, इस ढर्रे को दोहरा रहे होते हैं। परंतु जब आप उस चेतना से अलग हटते हैं, यानी उस ढर्रे को दोहराना बंद कर देते हैं तो आप समग्र चेतना में एक पूर्णतः नूतन तत्त्व समाविष्ट कर रहे होते हैं।</p>
<p>25 Now, if we understand the nature of our own consciousness, if we see how it is operating in this endless cycle of knowledge, action and division - a consciousness which has been sustained for millennia - if we see the truth that all this is a form of prejudice and break away from it, we introduce a new factor into the old. It means that you, as a human being who is of the consciousness of the rest of mankind, can move away from the old pattern of obedience and acceptance. That is the real turning point in your life. Man cannot go on repeating the old pattern, it has lost its meaning, - in the psychological world it has totally lost its meaning. If you fulfil yourself, who cares? If you become a saint, what does it matter? Whereas, if you totally move away from that you affect the whole consciousness of mankind.</p>	<p>यदि हम अपनी चेतना की प्रकृति को समझ लेते हैं, देख लेते हैं कि यह चेतना किस तरह ज्ञान, कर्म, और विभाजन के इस अविरत चक्र में कार्यरत है, एक ऐसी चेतना जिसे हजारों वर्षों से बनाए रखा गया है--यदि हम इस सत्य को देख-समझ लेते हैं कि यह सब पूर्वाग्रह का ही एक रूप है, और यह समझ कर इससे अलग हट जाते हैं, तो इस पुराने ढांचे में हम एक नये तत्त्व का समावेश करते हैं। इसका अर्थ यह कि आप, जो कि उसी चेतना के अंतर्गत हैं जो समस्त मनुष्य जाति की चेतना है, आज्ञाकारिता और स्वीकृति के उस पुराने ढांचे से अलग हट पाते हैं। यही आपके जीवन का संक्रांतिकाल होता है। उसी पुराने धिसे-पिटे ढांचे की पुनरावृत्ति मनुष्य कब तक करता रहेगा? वह ढांचा अपना अर्थ खो बैठा है--मानसिक विश्व में वह पूर्णतः अर्थहीन हो चुका है। आप अपने-आपको परितुष्ट कर लें, तो उससे क्या होता है? आप कोई संत बन बैठें तो भी उसका क्या महत्त्व? दूसरी ओर, उस पुराने ढांचे से यदि आप पूर्ण रूप से तिनका तोड़ लेते हैं, तो आप मनुष्य जाति की समग्र चेतना को प्रभावित कर पाते हैं।</p>
<p>26 14th July, 1981</p>	<p>ज्ञानेन, १४ जुलाई, १९८१</p>